



Vivek Maudgil

26 Nov 1977

03:00 PM

Dehradun

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121907701

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 26/11/1977  
दिन \_\_\_\_\_: शनिवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 15:00:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 20:18:32 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Dehradun  
राज्य \_\_\_\_\_: Uttarakhand  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 30:19:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 78:03:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:17:48 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 14:42:12 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:12:45 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 19:03:00 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:52:35 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:17:28 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:24:53 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: हेमन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 10:28:07 वृश्चिक  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 29:06:04 मीन

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मीन - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: वृष - शुक्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: रोहिणी - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: चन्द्र  
योग \_\_\_\_\_: सिद्ध  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: सर्प  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: वैश्य  
वश्य \_\_\_\_\_: चतुष्पाद  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: पूर्व  
हंसक \_\_\_\_\_: भूमि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: वी-वीरसिंह  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - स्वर्ण  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: धनु

### AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1899	मार्गशीर्ष	5
पंजाबी	संवत : 2034	मार्गशीर्ष	12
बंगाली	सन् : 1384	मार्गशीर्ष	10
तमिल	संवत : 2034	कार्तिक	11
केरल	कोल्लम : 1153	वृश्चिक	11
नेपाली	संवत : 2034	मार्गशीर्ष	11
चैत्रादि	संवत : 2034	मार्गशीर्ष	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2034	कार्तिक	कृष्ण 1

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 1  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:26:59  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 1  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रोहिणी  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 26:18:24 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : रोहिणी  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : शिव  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 12:09:10 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : सिद्ध  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बालव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 12:13:10 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 38:54:49  
भभोग \_\_\_\_\_ : 67:10:48  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : चंद्र 4 वर्ष 2 मा 12 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : मार्गशीर्ष  
तिथि \_\_\_\_\_ : 5-10-15  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : हस्त  
योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_ : शकुनि  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : सिंह  
लग्न \_\_\_\_\_ : वृष  
सूर्य \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : कन्या  
मंगल \_\_\_\_\_ : धनु  
बुध \_\_\_\_\_ : कन्या  
गुरु \_\_\_\_\_ : मकर  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मकर  
शनि \_\_\_\_\_ : तुला  
राहु \_\_\_\_\_ : मकर

## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

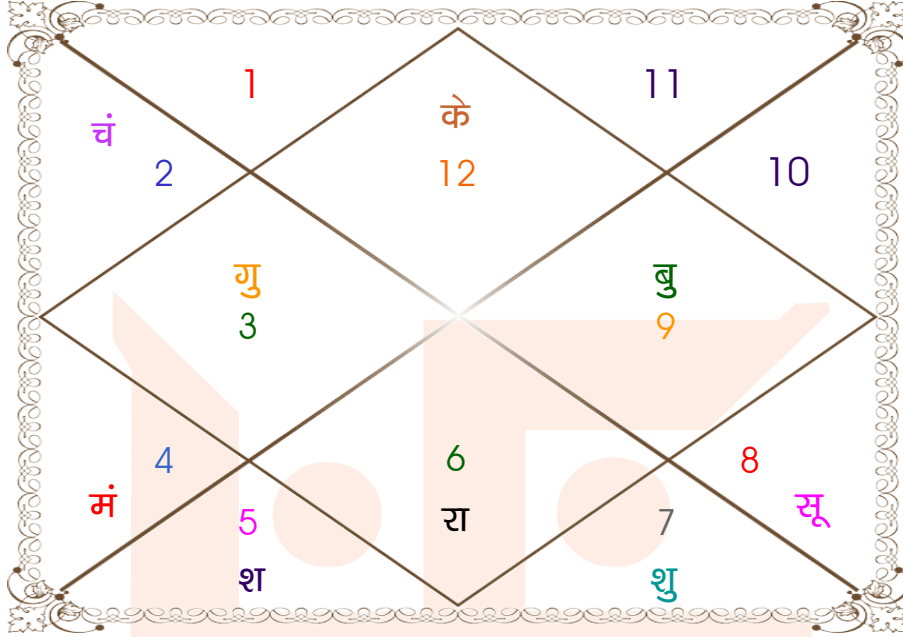
Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

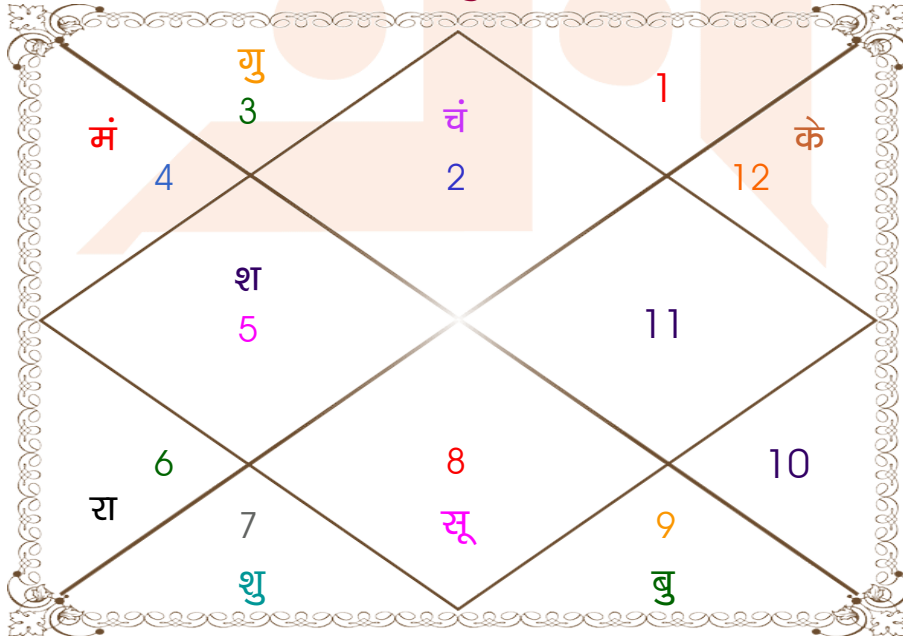
aaryam.org@gmail.com

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



**AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION**

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

के ल	चं	गु	
		मं	
		श	
बु	सू	शु	रा

### लग्न कुंडली

चं		के ल
गु		
मं		
श	शु	बु
रा	सू	

विंशोत्तरी  
चन्द्र 4वर्ष 2मा 12दि  
चन्द्र

26/11/1977

08/02/2092

चन्द्र	08/02/1982
मंगल	08/02/1989
राहु	08/02/2007
गुरु	08/02/2023
शनि	08/02/2042
बुध	08/02/2059
केतु	08/02/2066
शुक्र	08/02/2086
सूर्य	08/02/2092

योगिनी  
सिद्धा 2वर्ष 11मा 9दि  
पिंगला

05/11/2025

05/11/2027

पिंगला	15/12/2025
धान्या	14/02/2026
भामरी	06/05/2026
भद्रिका	16/08/2026
उल्का	16/12/2026
सिद्धा	07/05/2027
संकटा	16/10/2027
मंगला	05/11/2027

**AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION**

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

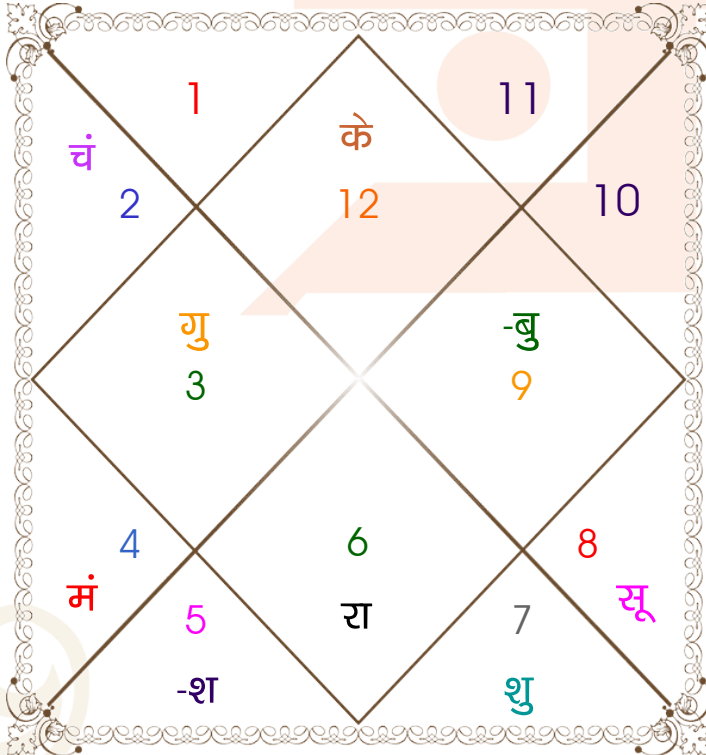
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	29:06:04	503:33:42	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	---
सूर्य			वृश्चि	10:28:07	01:00:42	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	मित्र राशि
चंद्र			वृष	17:43:50	11:54:10	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
मंगल			कर्क	16:20:31	00:11:41	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	नीच राशि
बुध			धनु	00:23:55	01:19:01	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	सम राशि
गुरु	व		मिथु	10:50:03	00:06:06	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			तुला	26:48:11	01:15:20	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	स्वराशि
शनि			सिंह	06:47:12	00:01:41	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	शत्रु राशि
राहु	व		कन्या	20:37:56	00:09:33	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	20:37:56	00:09:33	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	मूलत्रिकोण
हर्ष			तुला	19:54:12	00:03:35	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	---
नेप			वृश्चि	21:52:17	00:02:14	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	सूर्य	---
प्लूटो			कन्या	22:19:31	00:01:44	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	20:57:18	--	पूर्वाषाढा	--	20	गुरु	शुक्र	गुरु	--

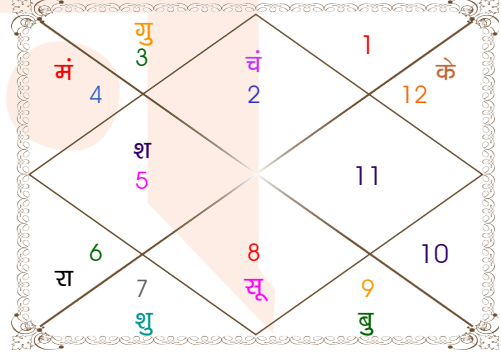
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:32:57

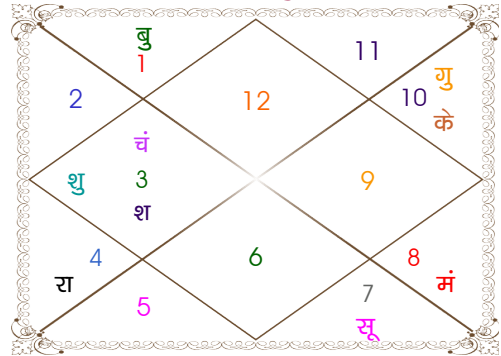
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



**AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION**

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 12:44:36	मीन 29:06:04
2	मेष 12:44:36	मेष 26:23:08
3	वृष 10:01:41	वृष 23:40:13
4	मिथुन 07:18:45	मिथुन 20:57:18
5	कर्क 07:18:45	कर्क 23:40:13
6	सिंह 10:01:41	सिंह 26:23:08
7	कन्या 12:44:36	कन्या 29:06:04
8	तुला 12:44:36	तुला 26:23:08
9	वृश्चिक 10:01:41	वृश्चिक 23:40:13
10	धनु 07:18:45	धनु 20:57:18
11	मकर 07:18:45	मकर 23:40:13
12	कुम्भ 10:01:41	कुम्भ 26:23:08

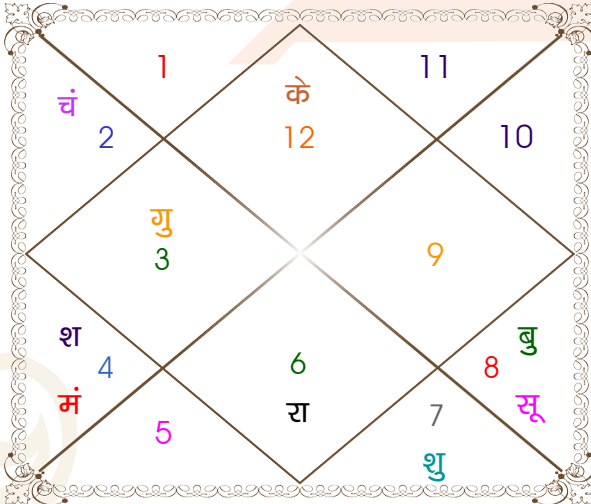
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	29:06:04
2	वृष	02:22:30
3	वृष	27:47:33
4	मिथुन	20:57:18
5	कर्क	16:08:31
6	सिंह	17:54:27
7	कन्या	29:06:04
8	वृश्चिक	02:22:30
9	वृश्चिक	27:47:33
10	धनु	20:57:18
11	मकर	16:08:31
12	कुम्भ	17:54:27

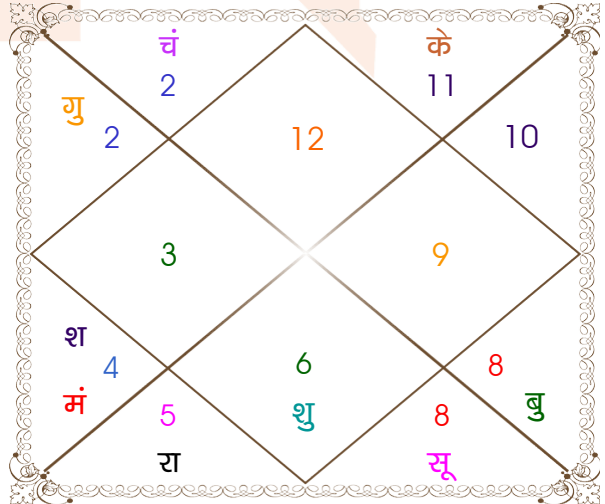
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

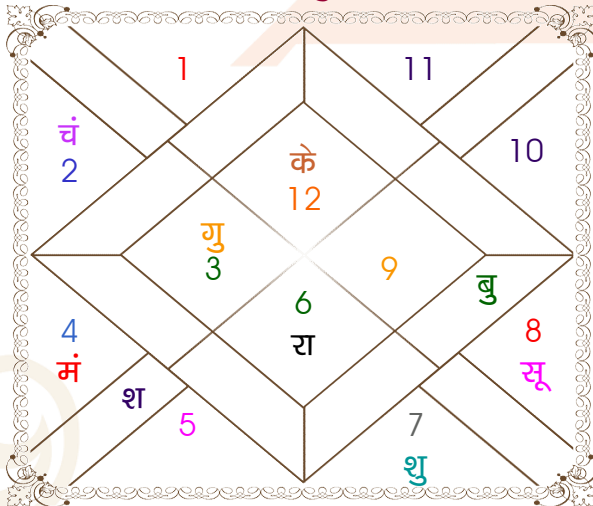
## कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	पुत्र	पितृ	वृद्ध	मुदित	आगम	1.69	50 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	युवा	स्वस्थ	निद्रा	16.53	51 %
मंगल	भातृ	भातृ	युवा	भीत	निद्रा	0.43	36 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	निपीदित	प्रकाश	1.45	52 %
गुरु	मातृ	धन	कुमार	खल	निद्रा	2.42	90 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	मृत	स्वस्थ	निद्रा	1.99	64 %
शनि	ज्ञाति	आयु	कुमार	खल	आगमन	2.97	33 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	स्वस्थ	आगम	0.00	51 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	स्वस्थ	भोजन	0.00	51 %
कुल						27.48	

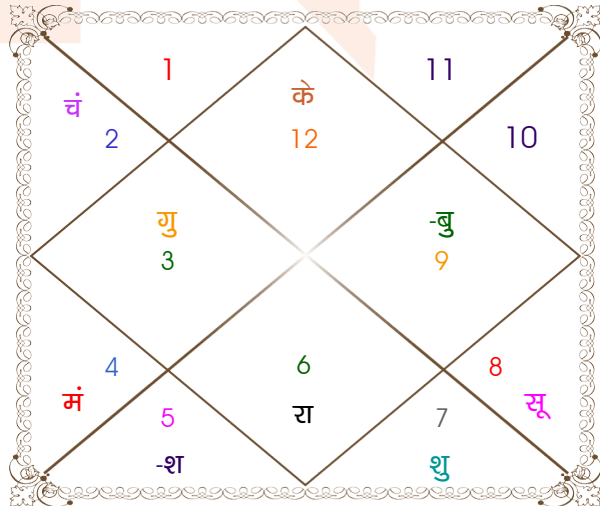
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

### चलित कुंडली



### लग्न-चलित



## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा

**भोग्य दशा काल : चन्द्र 4 वर्ष 2 मास 12 दिन**

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
26/11/1977	08/02/1982	08/02/1989	08/02/2007	08/02/2023
08/02/1982	08/02/1989	08/02/2007	08/02/2023	08/02/2042
00/00/0000	मंगल 07/07/1982	राहु 22/10/1991	गुरु 28/03/2009	शनि 11/02/2026
00/00/0000	राहु 26/07/1983	गुरु 16/03/1994	शनि 10/10/2011	बुध 21/10/2028
00/00/0000	गुरु 30/06/1984	शनि 20/01/1997	बुध 15/01/2014	केतु 30/11/2029
26/11/1977	शनि 09/08/1985	बुध 10/08/1999	केतु 21/12/2014	शुक्र 30/01/2033
शनि 09/12/1977	बुध 07/08/1986	केतु 27/08/2000	शुक्र 21/08/2017	सूर्य 12/01/2034
बुध 10/05/1979	केतु 03/01/1987	शुक्र 28/08/2003	सूर्य 10/06/2018	चंद्र 13/08/2035
केतु 10/12/1979	शुक्र 04/03/1988	सूर्य 22/07/2004	चंद्र 10/10/2019	मंगल 21/09/2036
शुक्र 09/08/1981	सूर्य 10/07/1988	चंद्र 21/01/2006	मंगल 15/09/2020	राहु 29/07/2039
सूर्य 08/02/1982	चंद्र 08/02/1989	मंगल 08/02/2007	राहु 08/02/2023	गुरु 08/02/2042

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
08/02/2042	08/02/2059	08/02/2066	08/02/2086	08/02/2092
08/02/2059	08/02/2066	08/02/2086	08/02/2092	00/00/0000
बुध 07/07/2044	केतु 07/07/2059	शुक्र 09/06/2069	सूर्य 29/05/2086	चंद्र 09/12/2092
केतु 04/07/2045	शुक्र 05/09/2060	सूर्य 10/06/2070	चंद्र 27/11/2086	मंगल 10/07/2093
शुक्र 04/05/2048	सूर्य 11/01/2061	चंद्र 08/02/2072	मंगल 04/04/2087	राहु 09/01/2095
सूर्य 10/03/2049	चंद्र 12/08/2061	मंगल 10/04/2073	राहु 27/02/2088	गुरु 10/05/2096
चंद्र 10/08/2050	मंगल 08/01/2062	राहु 09/04/2076	गुरु 15/12/2088	शनि 26/11/2097
मंगल 07/08/2051	राहु 27/01/2063	गुरु 09/12/2078	शनि 27/11/2089	00/00/0000
राहु 23/02/2054	गुरु 03/01/2064	शनि 08/02/2082	बुध 03/10/2090	00/00/0000
गुरु 31/05/2056	शनि 11/02/2065	बुध 09/12/2084	केतु 08/02/2091	00/00/0000
शनि 08/02/2059	बुध 08/02/2066	केतु 08/02/2086	शुक्र 08/02/2092	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 4 वर्ष 2 मा 15 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

### AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शनि - बुध</b> 11/02/2026 21/10/2028	<b>शनि - केतु</b> 21/10/2028 30/11/2029	<b>शनि - शुक्र</b> 30/11/2029 30/01/2033	<b>शनि - सूर्य</b> 30/01/2033 12/01/2034	<b>शनि - चंद्र</b> 12/01/2034 13/08/2035
बुध 30/06/2026 केतु 27/08/2026 शुक्र 06/02/2027 सूर्य 28/03/2027 चंद्र 18/06/2027 मंगल 14/08/2027 राहु 08/01/2028 गुरु 18/05/2028 शनि 21/10/2028	केतु 14/11/2028 शुक्र 20/01/2029 सूर्य 09/02/2029 चंद्र 15/03/2029 मंगल 08/04/2029 राहु 07/06/2029 गुरु 31/07/2029 शनि 04/10/2029 बुध 30/11/2029	शुक्र 11/06/2030 सूर्य 08/08/2030 चंद्र 12/11/2030 मंगल 18/01/2031 राहु 11/07/2031 गुरु 12/12/2031 शनि 12/06/2032 बुध 23/11/2032 केतु 30/01/2033	सूर्य 16/02/2033 चंद्र 17/03/2033 मंगल 06/04/2033 राहु 28/05/2033 गुरु 13/07/2033 शनि 06/09/2033 बुध 25/10/2033 केतु 15/11/2033 शुक्र 12/01/2034	चंद्र 01/03/2034 मंगल 03/04/2034 राहु 29/06/2034 गुरु 14/09/2034 शनि 15/12/2034 बुध 07/03/2035 केतु 10/04/2035 शुक्र 15/07/2035 सूर्य 13/08/2035
<b>शनि - मंगल</b> 13/08/2035 21/09/2036	<b>शनि - राहु</b> 21/09/2036 29/07/2039	<b>शनि - गुरु</b> 29/07/2039 08/02/2042	<b>बुध - बुध</b> 08/02/2042 07/07/2044	<b>बुध - केतु</b> 07/07/2044 04/07/2045
मंगल 05/09/2035 राहु 05/11/2035 गुरु 29/12/2035 शनि 02/03/2036 बुध 29/04/2036 केतु 22/05/2036 शुक्र 29/07/2036 सूर्य 18/08/2036 चंद्र 21/09/2036	राहु 24/02/2037 गुरु 13/07/2037 शनि 24/12/2037 बुध 21/05/2038 केतु 21/07/2038 शुक्र 10/01/2039 सूर्य 03/03/2039 चंद्र 29/05/2039 मंगल 29/07/2039	गुरु 29/11/2039 शनि 24/04/2040 बुध 02/09/2040 केतु 26/10/2040 शुक्र 29/03/2041 सूर्य 14/05/2041 चंद्र 30/07/2041 मंगल 22/09/2041 राहु 08/02/2042	बुध 13/06/2042 केतु 03/08/2042 शुक्र 27/12/2042 सूर्य 09/02/2043 चंद्र 24/04/2043 मंगल 14/06/2043 राहु 24/10/2043 गुरु 18/02/2044 शनि 07/07/2044	केतु 28/07/2044 शुक्र 26/09/2044 सूर्य 14/10/2044 चंद्र 13/11/2044 मंगल 04/12/2044 राहु 28/01/2045 गुरु 17/03/2045 शनि 13/05/2045 बुध 04/07/2045
<b>बुध - शुक्र</b> 04/07/2045 04/05/2048	<b>बुध - सूर्य</b> 04/05/2048 10/03/2049	<b>बुध - चंद्र</b> 10/03/2049 10/08/2050	<b>बुध - मंगल</b> 10/08/2050 07/08/2051	<b>बुध - राहु</b> 07/08/2051 23/02/2054
शुक्र 23/12/2045 सूर्य 13/02/2046 चंद्र 10/05/2046 मंगल 10/07/2046 राहु 12/12/2046 गुरु 29/04/2047 शनि 10/10/2047 बुध 04/03/2048 केतु 04/05/2048	सूर्य 19/05/2048 चंद्र 14/06/2048 मंगल 02/07/2048 राहु 18/08/2048 गुरु 28/09/2048 शनि 16/11/2048 बुध 30/12/2048 केतु 17/01/2049 शुक्र 10/03/2049	चंद्र 22/04/2049 मंगल 22/05/2049 राहु 08/08/2049 गुरु 16/10/2049 शनि 06/01/2050 बुध 20/03/2050 केतु 19/04/2050 शुक्र 15/07/2050 सूर्य 10/08/2050	मंगल 31/08/2050 राहु 24/10/2050 गुरु 11/12/2050 शनि 07/02/2051 बुध 30/03/2051 केतु 20/04/2051 शुक्र 19/06/2051 सूर्य 08/07/2051 चंद्र 07/08/2051	राहु 24/12/2051 गुरु 27/04/2052 शनि 21/09/2052 बुध 31/01/2053 केतु 26/03/2053 शुक्र 29/08/2053 सूर्य 14/10/2053 चंद्र 31/12/2053 मंगल 23/02/2054

### AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>बुध - गुरु</b> 23/02/2054 31/05/2056	<b>बुध - शनि</b> 31/05/2056 08/02/2059	<b>केतु - केतु</b> 08/02/2059 07/07/2059	<b>केतु - शुक्र</b> 07/07/2059 05/09/2060	<b>केतु - सूर्य</b> 05/09/2060 11/01/2061
गुरु 14/06/2054 शनि 23/10/2054 बुध 17/02/2055 केतु 06/04/2055 शुक्र 22/08/2055 सूर्य 03/10/2055 चंद्र 11/12/2055 मंगल 28/01/2056 राहु 31/05/2056	शनि 03/11/2056 बुध 22/03/2057 केतु 18/05/2057 शुक्र 29/10/2057 सूर्य 17/12/2057 चंद्र 09/03/2058 मंगल 06/05/2058 राहु 30/09/2058 गुरु 08/02/2059	केतु 17/02/2059 शुक्र 14/03/2059 सूर्य 21/03/2059 चंद्र 03/04/2059 मंगल 11/04/2059 राहु 04/05/2059 गुरु 24/05/2059 शनि 16/06/2059 बुध 07/07/2059	शुक्र 16/09/2059 सूर्य 08/10/2059 चंद्र 12/11/2059 मंगल 07/12/2059 राहु 09/02/2060 गुरु 06/04/2060 शनि 12/06/2060 बुध 12/08/2060 केतु 05/09/2060	सूर्य 12/09/2060 चंद्र 22/09/2060 मंगल 30/09/2060 राहु 19/10/2060 गुरु 05/11/2060 शनि 25/11/2060 बुध 14/12/2060 केतु 21/12/2060 शुक्र 11/01/2061
<b>केतु - चंद्र</b> 11/01/2061 12/08/2061	<b>केतु - मंगल</b> 12/08/2061 08/01/2062	<b>केतु - राहु</b> 08/01/2062 27/01/2063	<b>केतु - गुरु</b> 27/01/2063 03/01/2064	<b>केतु - शनि</b> 03/01/2064 11/02/2065
चंद्र 29/01/2061 मंगल 10/02/2061 राहु 14/03/2061 गुरु 12/04/2061 शनि 16/05/2061 बुध 15/06/2061 केतु 27/06/2061 शुक्र 02/08/2061 सूर्य 12/08/2061	मंगल 21/08/2061 राहु 12/09/2061 गुरु 02/10/2061 शनि 26/10/2061 बुध 16/11/2061 केतु 25/11/2061 शुक्र 20/12/2061 सूर्य 27/12/2061 चंद्र 08/01/2062	राहु 07/03/2062 गुरु 27/04/2062 शनि 27/06/2062 बुध 20/08/2062 केतु 12/09/2062 शुक्र 14/11/2062 सूर्य 04/12/2062 चंद्र 05/01/2063 मंगल 27/01/2063	गुरु 13/03/2063 शनि 06/05/2063 बुध 24/06/2063 केतु 14/07/2063 शुक्र 08/09/2063 सूर्य 25/09/2063 चंद्र 24/10/2063 मंगल 13/11/2063 राहु 03/01/2064	शनि 07/03/2064 बुध 03/05/2064 केतु 27/05/2064 शुक्र 02/08/2064 सूर्य 23/08/2064 चंद्र 25/09/2064 मंगल 19/10/2064 राहु 19/12/2064 गुरु 11/02/2065
<b>केतु - बुध</b> 11/02/2065 08/02/2066	<b>शुक्र - शुक्र</b> 08/02/2066 09/06/2069	<b>शुक्र - सूर्य</b> 09/06/2069 10/06/2070	<b>शुक्र - चंद्र</b> 10/06/2070 08/02/2072	<b>शुक्र - मंगल</b> 08/02/2072 10/04/2073
बुध 03/04/2065 केतु 24/04/2065 शुक्र 24/06/2065 सूर्य 12/07/2065 चंद्र 11/08/2065 मंगल 01/09/2065 राहु 25/10/2065 गुरु 13/12/2065 शनि 08/02/2066	शुक्र 30/08/2066 सूर्य 30/10/2066 चंद्र 08/02/2067 मंगल 20/04/2067 राहु 20/10/2067 गुरु 30/03/2068 शनि 09/10/2068 बुध 30/03/2069 केतु 09/06/2069	सूर्य 28/06/2069 चंद्र 28/07/2069 मंगल 18/08/2069 राहु 12/10/2069 गुरु 30/11/2069 शनि 27/01/2070 बुध 19/03/2070 केतु 10/04/2070 शुक्र 10/06/2070	चंद्र 30/07/2070 मंगल 04/09/2070 राहु 04/12/2070 गुरु 23/02/2071 शनि 31/05/2071 बुध 25/08/2071 केतु 30/09/2071 शुक्र 09/01/2072 सूर्य 08/02/2072	मंगल 04/03/2072 राहु 07/05/2072 गुरु 03/07/2072 शनि 08/09/2072 बुध 08/11/2072 केतु 03/12/2072 शुक्र 12/02/2073 सूर्य 05/03/2073 चंद्र 10/04/2073

### AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 2, 8, 7
शत्रु अंक	3, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

### AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

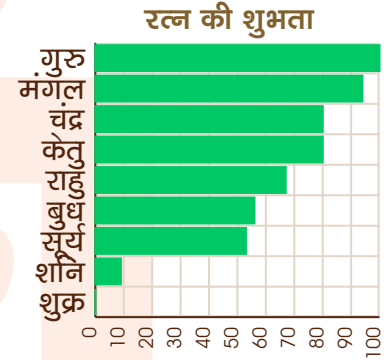
aaryam.org@gmail.com

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	94%	सन्तति सुख, धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	80%	पराक्रम, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	80%	स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	67%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	56%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, दम्पति
माणिक्य	सूर्य	53%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
नीलम	शनि	9%	शत्रु व रोग, हानि, व्यय
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	08/02/1982	59%	93%	94%	62%	100%	0%	9%	55%	68%
मंगल	08/02/1989	59%	86%	100%	38%	100%	0%	9%	55%	86%
राहु	08/02/2007	31%	68%	81%	56%	100%	0%	22%	80%	68%
गुरु	08/02/2023	59%	86%	100%	38%	100%	0%	9%	67%	80%
शनि	08/02/2042	31%	68%	81%	62%	100%	0%	34%	74%	68%
बुध	08/02/2059	59%	68%	94%	69%	100%	0%	9%	67%	80%
केतु	08/02/2066	31%	68%	100%	56%	100%	0%	0%	55%	93%
शुक्र	08/02/2086	31%	68%	94%	62%	100%	0%	22%	74%	86%
सूर्य	08/02/2092	66%	86%	100%	56%	100%	0%	0%	55%	68%

## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/11/1977-04/11/1979 15/03/1980-27/07/1980	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	धन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	सुख

## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

**AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION**

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।



**AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION**

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

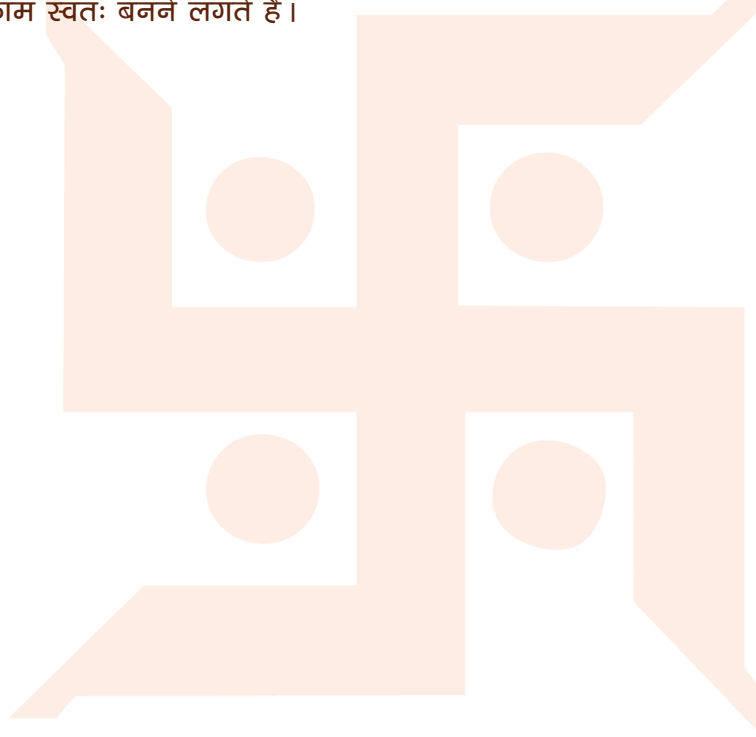
आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को

प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मीन लग्न की है। आपका व्यक्तित्व गुरु के समान है। आप थोड़े से जिद्दी, धार्मिक और संयमी स्वभाव के हैं। गुरु के समान आदर और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। बहुत जल्दी लोगों के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं। आपके चहरे पर एक तेज होता है। आप अच्छे वक्ता, गुरु और सलाहकार साबित हो सकते हैं। साथ ही आप थोड़े से पारंपरिक भी हैं, अतः आसानी से अपनी जड़ों से दूर नहीं जा पाते। आपको आसानी से गुस्सा नहीं आता परन्तु जब आता है तो अत्यधिक आता है।

आपकी प्रकृति गंभीर है, और आप सभी बातें भूल सकते हैं। परन्तु अपनी परम्परा और सिद्धांतों को नहीं भूल सकते। धर्म का पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप

महत्वाकांशी है, आपको स्वतन्त्र रहना पसंद है, बड़ों की बातों पर अमल करते हैं। आत्मविश्वासी है, और अपने कार्यों में आपको दक्षता प्राप्त है। साथ ही आपने दृढ़ निश्चय का गुण होता है। इसी कारण कार्यों को समय पर पूरा करा लेते हैं। आपकी कार्यप्रणाली साही और सरल होती है परन्तु आप लोक अक्सर ज्ञान बाँटते हुए दिखाई देते हैं। आप गलती करने पर सजा भी देते हैं और कभी-कभी नम्र और कभी-कभी कठोर भी बन जाते हैं।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। अष्टम भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए सूर्य षष्ठेश, शुक्र अष्टमेश व तृतीयेश, मंगल द्वादशेश तथा नवमेश हैं। षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव- भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपत्तिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता है।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



**AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION**

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं बलवान होते हैं तथा सरलता एवं समानता का भाव इनमें विद्यमान रहता है। इनके चेहरे पर सौम्यता का भाव भी रहता है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करके अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहते हैं। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण रहता है तथा भौतिक सुखों का उपभोग करके इन्हें सुख शांति की अनुभूति होती है। ये एक से अधिक आय स्रोत से धनार्जन करते हैं। साथ ही चिन्तन मनन में भी ये काफी समय व्यतीत करते हैं।

प्रकृति के प्रति इनके मन में आकर्षण रहता है तथा प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करके प्रसन्नता प्राप्त करते हैं। अन्य जनों के प्रति इनके मन में सदभावना रहती है तथा प्रेम के क्षेत्र में ये सरलता एवं भावुकता का प्रदर्शन करते हैं। ये व्यवहार कुशल होते हैं तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में इच्छित सफलता अर्जित करते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन के क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा सम्मान अर्जित करेंगे। आपके विचारों से अन्य लोग सहमत रहेंगे। भौतिकता के प्रति आपकी लालसा रहेगी तथा भौतिक सुखोंको अर्जित करके आनंद पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पराक्रमी तथा तेजस्वी व्यक्ति होंगे तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ कार्यों को पराक्रम एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे परन्तु यदा कदा आप उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको अनावश्यक परेशानी तथा समस्याएं उत्पन्न होंगी। अतः ऐसी प्रवृत्ति की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे फलतः ऐश्वर्य एवं वैभव की आपको प्राप्ति होगी। भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त होकर आप सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी तथा अपने कार्यों से आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा अवसरानुकूल धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। इसी परिपेक्ष्य में आपकी कोई तीर्थ या धार्मिक यात्रा भी सम्पन्न होगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप विद्वान बुद्धिमान एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा सुखों को अर्जित करके आनंदपूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रुचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा बृहस्पति भी लग्नेश होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते हैं।

बृहस्पति की बुध की राशि में चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से बृद्धावस्था में आप अल्प मात्रा में रक्तचाप या हृदय संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते हैं लेकिन इसके लिए यदि खान-पान पर विशेष ध्यान दिया जाय तो इन परेशानियों से आप मुक्त हो सकते हैं तथा

आपका समय सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा ।



**AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION**

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। तथा मंगल भी पंचमभाव में आप सामान्यतया बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपना सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। लेकिन आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति अल्प मात्रा में ही होगी जिससे सुअवसरों का लाभ उठाने में असमर्थ होंगे। अतः महत्वपूर्ण कार्यों को अत्यंत ही सोच-समझकर पूरा करना चाहिए। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान साहित्य एवं कला आदि के प्रति पूर्ण रुचिशील होंगे तथा इनका परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके इस क्षेत्र में विद्वता का प्रदर्शन करेंगे। जिससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे।

मंगल की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी काफी रूचि होगी तथा उनसे आपको मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी। आपके प्रेम में भावनात्मक आकर्षण भी विद्यमान होगा। लेकिन प्रेम-प्रसंगों में आपको मर्यादा एवं नैतिकता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अन्यथा इस क्षेत्र में आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक सम्मान भी प्रभावित होगा। अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

संतति भाव में मंगल की स्थिति के प्रभाव से आपके संतति प्राप्ति में विलम्ब का सामना करना पड़ सकता है लेकिन संतति प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति पराक्रमी तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता-पिता के प्रति उनका सम्मान, आदर एवं श्रद्धा का भाव होगा तथापि वे स्वच्छन्द एवं स्वतन्त्र प्रवृत्ति के होंगे फलतः अधिकांश कार्यों को अपनी मरजी से ही करेंगे तथा इसमें माता-पिता का सहयोग या सलाह अल्प मात्रा में ही लेंगे लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र कार्य करने देने चाहिए। इससे सम्बन्धों में अनुकूलता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चों से विशेष अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए तथा यथोचित धन संचय करके रखना चाहिए जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े तथा वृद्धावस्था शान्ति पूर्वक व्यतीत कर सकें।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपके बच्चों की उन्नति सामान्य होगी तथा परिश्रम पूर्वक ही वे वांछित सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगे लेकिन वे व्यवहार कुशल परिश्रमी तथा पराक्रमी होंगे तथा उचित अजीविकार्जन में सफल होंगे अतः आपको उनकी विशेष चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त तेजस्वी एवं उग्रस्वभाव होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद भी हो सकता है जो आपके लिए अनावश्यक परेशानियों का कारण बनेंगी। लेकिन अपने सद्व्यवहार से आप स्थितियों को सम्भालने में समर्थ होंगे। अतः आपका संतति सुख मध्यम होगा।

## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा राहु भी स्वगृही होकर सप्तम भाव में ही बैठा है सामान्यतया कन्या राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी प्रिय वक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यवान एवं विविध कार्यों में दक्ष होता है। स्वगृही राहु के प्रभाव से उसमें तेजस्विता पराक्रम साहस एवं कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की तेजस्वी महिला होंगी तथा विविध प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में समर्थ होंगी। अपने सभाषण में सामान्यतया मधुर शब्दों का ही प्रयोग करेंगी तथा स्वच्छता की ओर विशेष सजग रहेंगी। स्वगृही राहु के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी किंचित श्याम वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य होगा शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के अन्य अंग भी पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे। इससे सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक बनेगा। वह आधुनिक विचारों की भी महिला होंगी एवं पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति के प्रति मन में आकर्षण रहेगा कला एवं संगीत में भी रुचिशील रहेंगी तथा उनका काफी समय इसी पर व्यतीत होगा।

सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से यद्यपि आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा परन्तु स्वगृही होने के कारण विशेष समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या राहु के प्रभाव से आप स्वेच्छा से भी विवाह कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं आकर्षण बना रहेगा। आप महत्वपूर्ण कार्यों एवं योजनाओं को आपसी सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे इससे संबंधों में मधुरता तथा विश्वास में वृद्धि होगी।

आपका विवाह मध्यम परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से वे सम्पन्न होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा अवसरानुकूल महत्वपूर्ण योजनाओं या कार्यों में परस्पर सलाह का भी आदान प्रदान होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा भावना होगी तथा सुख दुख में उनका अपनी ओर से पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने हास्य प्रिय व्यवहार से सन्तुष्ट रखेंगी जिससे वे उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति मध्यम रहेगी तथा अत्यावश्यक होने पर ही आपको साझेदारी का निर्णय लेना चाहिए। अतः यदि किसी संबंधी से साझेदारी हो तो इससे विश्वसनीयता बनी रहेगी एवं लाभ भी होगा।

## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा बुध भी दशमभाव में ही स्थित है। धनु राशि अग्नितत्व एवं बुध पृथ्वी तत्व ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

धनुराशि में दशमभावस्थ बुध के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए।

दशमभाव में बुध के प्रभाव से व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने, आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेंगे।

दशमभाव में बुध के प्रभाव से जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारम्भिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिकता का भाव भी होगा तथा

शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।



**AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION**

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

[aaryam.org@gmail.com](mailto:aaryam.org@gmail.com)

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकते हैं। जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा परन्तु दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले जातकों का पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। यदि आप शेयर बजार से जुड़े हैं तो आप को लाभ प्राप्त होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

### धन संपत्ति

द्वादश स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे, जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

02 जून के बाद एकादश पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। उस समय छोटे मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। 31 अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो इसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा जिससे सभी लोगों के अंदर साहनुभूति की भावना बनी रहेगी। आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा परन्तु आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके

बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। भाईयोंका सहयोग प्राप्त होगा। समाज मेंपद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 31 अक्टूबर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

### संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा समय है। आपके बच्चे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। पहले बच्चे का विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

### स्वास्थ्य

लग्नस्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो शरीर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहेंगे।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों के लिए 02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। जो लोग नौकरी की तालाश में है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

### यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे।

## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जूनबाद लम्बी यात्रा के भी योग बन रहे हैं। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 02 जूनके बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अपनी अध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए मन्त्र पाठ यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं और हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं।



## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष एकादश भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य से अच्छा रहेगा। कार्य, व्यापार में सफलता तो मिलेगी परन्तु इसके लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। लग्नस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगा। जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके व्यापार पर भी पड़ सकता है। गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु आलस्य के कारण उसका भी लाभ नहीं ले पाएंगे।

जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आप के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। साझेदारी में व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग नहीं मिलेगा, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धन लाभ होता रहेगा परन्तु लग्नस्थ शनि के प्रभाव से बीमारी में भी आप का पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों

को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाइयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए ये समय ज्यादा खराब है। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

### संतान

संतान के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो जाएगा।

जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में अनुकूल बनी रहेगी। आपके अंदर सकारात्मक उर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

जून के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु पेट संबंधित रोग दे सकता है अतः उस समय अधिक तला व मसालेदार भोजन न करें।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया है। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं

करेंगे। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है।

26 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा परन्तु पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होगी। आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप व दान पुण्य आदि क्रियाओं के प्रति आपकी विशेष रुचि बनी रहेगी।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरण करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बढ़िया रहेगा। इस अवधि में आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको किसी पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह फिर से अनुकूल हो रहा है। किसी के साथ मिलकर कोई कार्य कर सकते हैं जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। आपको कार्यों में पत्नी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने सफल रहेंगे। एकादश के राहु अचानक धन लाभ करायेंगे। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिल सकते हैं। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार के सदस्यों पर भी आपका अधिक खर्च होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ परिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर-परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हाने की सम्भावना है। परिवार में विवाह आदि शुभ कार्य होने से खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की

अहम भूमिका होगी।

### संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

24 जुलाई के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। यदि आप बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

### स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है परन्तु फरवरी के बाद मौसामजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं। उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें। नहीं तो शरीरिक परेशानी बढ़ सकती है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें। मानसिक रूप से दृढ़ रहें।

गुरु ग्रह का गोचर 24 जुलाई को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

### यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 28 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं भी होंगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। आपकी अपने घर से दूर की यात्रा हो सकती है।

## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि आएगी एवं आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।



## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान के शनि कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। मार्च के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपको इष्ट मित्रों का सहयोग मिलने के कारण कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में कठिनाईयों के बावजूद भी विस्तार की संभावनाएं बन रही हैं। साझेदारी के लिए उपयुक्त समय है।

अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप कोई नया कार्य शुरू करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। बड़े अधिकारियों का भी सहयोग मिलता रहेगा।

### धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। सन्तान या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे।

मार्च के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। 08 अगस्त के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

29 मार्च से आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल व परिश्रम से आगे बढ़ेंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता बनी रहेगी। दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान रहे सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी शुरु हो जाएगी। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें। मार्च के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

08 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

## यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। 25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आपकी जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी होगी।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की मदद करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी

## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को बेसन के लड्डू दान करें।



## **AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION**

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपने सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

### व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। शनि का गोचरीय प्रभाव आपके व्यावसायिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लेकर आएगा। आपका कठिन परिश्रम, कर्तव्यपरायणता एवं ईमानदारी आपके वरिष्ठ अधिकारियों को प्रभावित करेगी। आपके काम करने का तरीका भी आपको दूसरों से अलग बनाता है।

मई से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। इस दौर में गलत फहमियों के कारण आप व्याकुल होंगे और चिड़चिड़ा महसूस करेंगे। अथक प्रयास करने के बाद भी परिणाम आपके अनुसार नहीं होंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालांकि 23 सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपकी मेहनत आपके अधिकारियों की नजर में आएगी और वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। यह साल जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप निवेश करना शुरू कर सकते हैं। इस समय आप नयी सौदेबाजी भी कर सकते हैं।

मई से गुरु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। 23 सितम्बर के बाद आप जो योजना बनाएंगे, कार्य वैसे ही संपन्न होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं साथ ही परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे, परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद समय आपके लिए बहुत अच्छा

हो रहा है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

मई से गुरु का गोचर ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब कर सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं नहीं तो उन लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

### संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

17 अप्रैल के बाद पांचवे भाव पर शनि की दृष्टि के कारण संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उनके अध्ययन कार्य में एकाग्रता नहीं रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं भी बनी रहेगी।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। 1 मई के बाद अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है।

23 सितम्बर से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरू हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगी। विद्यार्थियों को वर्ष के प्रारम्भ में योग्यतानुसार सफलता मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष अड़चनें नहीं आएंगी।

अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। अप्रैल के बाद आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित होंगे।

### यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। जल्दी-जल्दी यात्रा की संभावना बन रही है।

आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे। कुछ समय के

## AARYAM INTERNATIONAL FOUNDATION

Bhagwan Shankar Ashram - Mussoorie Dehradun (U.K.)

9891646567

aaryam.org@gmail.com

लिए प्रवास भी कर सकते हैं। मई के बाद देश विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवम स्थान में राहु गुरु की युति धार्मिक कार्यों में व्यवधान डाल सकती है। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा जिससे आप पूजा, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

